



धमाका डिस्टाईंट ऑफर

Exchange & Finance Available

Zelo Electric Scooter

Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

Commodity:	Gold 1,51,905	Silver 2,95,000	Crude Oil 5,963	Natural Gas 302.20	Aluminium 232.30	Copper 827.35
------------	---------------	-----------------	-----------------	--------------------	------------------	---------------

दुग्ध उत्पादन में बनेगा मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि युवा शक्ति को उन्नत खेती से जोड़ने, किसानों की आय बढ़ाने के साथ कृषि उत्पादों के निर्यात पर राज्य सरकार विशेष ध्यान दे रही है। बदलते दौर में खेती का भी समय बदला है। नई तकनीक और नई फसलों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार संकल्पित है। युवाओं को अपनी जड़ों से जुड़ा रहना आवश्यक है। युवा कृषि संकाय की पढ़ाई कर अपने लिए भविष्य के लिए नए रास्ते बनाएँ। किसान, वेयरहाउस, पॉली हाउस स्थापित करें। मध्यप्रदेश में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) के साथ एमओयू किया गया है। राज्य सरकार मध्यप्रदेश को दुग्ध उत्पादन में अग्रणी राज्य बनाना चाहती है। दुग्ध उत्पादन किसानों

की आय बढ़ाने में विशेष रूप से सहायक है। राज्य सरकार के प्रयासों से किसानों को अब दूध के दाम 8 से 10 रुपए प्रति लीटर अधिक मिलने लगे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश युवा आयोग द्वारा आयोजित कृषि नवाचार संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रवीन्द्र भवन में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्रतिवर्ष एक लाख गिर नस्ल की बछिया तैयार करने की योजना शीघ्र ही क्रियान्वित की जाएगी, इससे दुग्ध उत्पादन

बढ़ेगा। पशुपालकों को उन्नत नस्लें उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना की शुरुआत की है। किसान खेती के माध्यम से कई लोगों को आजीविका का साधन उपलब्ध करता है और प्रकृति की सेवा भी करता है। किसान का हित राज्य सरकार के लिए सर्वोपरि है। इस अवसर पर खेल एवं युवा कल्याण, सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग, युवा आयोग के अध्यक्ष श्री प्रवीण शर्मा उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में उपस्थित कृषि महाविद्यालयों के विद्यार्थियों, कृषि स्टार्ट-अप प्रतिनिधियों,

एग्रीकल्चर इन्स्युएंसर्स तथा कृषि क्षेत्र में नवाचार कर रहे व्यक्तियों से संवाद किया।

युवा कृषि की नई तकनीक अपनाएं – मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश में सिंचाई का रकबा तेजी से बढ़ रहा है। राज्य सरकार ने अगले 5 साल में सिंचाई का रकबा बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। हमारी कोशिश है कि हर गांव तक स्वच्छ पेयजल और हर खेत तक सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो जाए। उन्होंने कहा कि हजारों सालों से हमारी पहचान कृषि प्रधान देश की है। राज्य सरकार खेती में युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए हर प्रकार से मदद कर रही है। प्रदेश के विश्वविद्यालयों में कृषि संकाय की पढ़ाई शुरू करवाई गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि

मध्यप्रदेश को कृषि क्षेत्र में समृद्ध बनाने के लिए संभाग और जिला स्तर पर कृषि नवाचार संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्राकृतिक और जैविक खेती से जुड़ने के लिए युवाओं को प्रेरित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को फसल के लिए एमएसपी पर उचित मूल्य मिले, इसके लिए राज्य सरकार निरंतर किसान हितैषी निर्णय ले रही है। राज्य सरकार ने किसानों को एमएसपी पर हर साल बोनस देकर गेहूं खरीदा है। मध्यप्रदेश देश में सबसे अधिक गेहूं का उपार्जन करने वाला राज्य बना है। सोयाबीन की फसल पर भी किसानों को भावांतर योजना अंतर्गत लाभ दिया गया है।

मध्य प्रदेश को कृषि क्षेत्र में समृद्ध बनाने के लिए संभाग और जिला स्तर पर कृषि नवाचार संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्राकृतिक और जैविक खेती से जुड़ने के लिए युवाओं को प्रेरित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को फसल के लिए एमएसपी पर उचित मूल्य मिले, इसके लिए राज्य सरकार निरंतर किसान हितैषी निर्णय ले रही है। राज्य सरकार ने किसानों को एमएसपी पर हर साल बोनस देकर गेहूं खरीदा है। मध्यप्रदेश देश में सबसे अधिक गेहूं का उपार्जन करने वाला राज्य बना है। सोयाबीन की फसल पर भी किसानों को भावांतर योजना अंतर्गत लाभ दिया गया है।

एमपी में अफसरों की मनमानी पर कसा शिकंजा फाइल दवाने पर सैलरी से कटेगा जुर्माना

भोपाल। मध्य प्रदेश में अब कोई भी सरकारी अधिकारी या कर्मचारी उद्योग, व्यापार या निवेश से जुड़ी फाइलों को अटक कर नहीं रख सकेगा। राज्य सरकार ने 'मध्यप्रदेश ईज ऑफ डूइंग बिजनेस अधिनियम, 2026' के माध्यम से एक नई डिजिटल प्रणाली लागू की है, जो तय समय-सीमा में काम न करने वाले अधिकारियों की शक्तियां स्वतः छीन लेगी। प्रशासनिक लेटलतीफी को खत्म करने के लिए लागू इस व्यवस्था में समय पर मंजूरी न देने वाले अफसरों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई और वेतन से पेनल्टी काटने का प्रावधान किया गया है।

सिंगल विंडो सिस्टम से

एमपी में 11 और सिंचाई परियोजनाओं को मिलेगी मंजूरी! 1.15 लाख हेक्टेयर जमीन होगी सिंचित, कई जिलों के किसानों को होगा फायदा

भोपाल। पार्वती-काली सिंध-चंबल (पीकेसी) परियोजना में प्रदेश की 11 और सिंचाई परियोजनाओं को स्वीकृति मिलने के आसार हैं। केंद्रीय जल आयोग इसकी सैद्धांतिक सहमति दे चुका है, अब इसे केंद्रीय कैबिनेट में प्रस्तुत करने की तैयारी है। इसे स्वीकृति मिलती है तो भोपाल, शाजापुर, राजगढ़ सहित कुछ जिलों में 1.15 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता विकसित हो सकेगी।

पार्वती और चंबल नदी के पानी का होगा उपयोग – इन क्षेत्रों में पाइपलाइन के माध्यम से पानी पहुंचाया जाएगा। चार



परियोजनाओं में पार्वती और सात में चंबल नदी का पानी उपयोग किया जाएगा।

ये लगभग छह हजार करोड़ रुपये की परियोजनाएं हैं, लेकिन पीकेसी में शामिल होने पर मध्य

प्रदेश को मात्र 10 प्रतिशत यानी 600 करोड़ रुपये ही देने पड़ेंगे। बता दें कि पीकेसी केंद्र सरकार, राजस्थान और मध्य प्रदेश की संयुक्त परियोजना है। एमओयू के अनुसार 90 प्रतिशत राशि केंद्र सरकार दे रही है। केंद्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान के बीच 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में एमओयू हुआ था। उस समय की स्थिति में परियोजना की लागत 72 हजार करोड़ रुपये थी।

11 नई परियोजनाओं का प्रस्ताव और सिंचाई का लक्ष्य – जल संसाधन विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि पूर्व में स्वीकृति परियोजनाओं से प्रदेश के 13 जिलों का छह लाख हेक्टेयर क्षेत्र सिंचित होगा। इसके बाद भी प्रदेश के हिस्से का पानी बच रहा है। इसी आधार पर 16 अन्य परियोजनाओं का प्रस्ताव भेजा गया था, जिसमें 11 को कैबिनेट से स्वीकृति मिल सकती है। इनमें बुहद, मध्यम-सूक्ष्म और सूक्ष्म परियोजनाएं सम्मिलित हैं। यह भी बता दें कि प्रदेश में सिंचित क्षेत्र अभी 65 लाख हेक्टेयर है जिसे 2028 तक 100 लाख हेक्टेयर तक करने का लक्ष्य है।

उज्जैन से नीमच 210KM नॉन-स्टॉप डाक कावड़ : 12 घंटे 5 मिनट में तय किया सफर, महाकाल के जल से सोमेश्वर महादेव का जलाभिषेक

नीमच । नीमच में यदुवीर सेना जिला नीमच द्वारा आयोजित 'डाक कावड़ यात्रा 3.0' ने सोमवार को एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उज्जैन स्थित बाबा महाकालेश्वर के दरबार से पवित्र जल लेकर निकले कावड़ियों ने 210 किलोमीटर की अत्यंत कठिन नॉन-स्टॉप दूरी मात्र 12 घंटे 5 मिनट में पूरी की। नीमच के इतिहास में सबसे तेज डाक कावड़ लाने का यह अब तक का नया रिकॉर्ड बन गया है।

तड़के 2:35 बजे महाकाल मंदिर से शुरू हुई यात्रा - यह विशेष डाक कावड़ यात्रा 24 अगस्त को तड़के 2:35 बजे उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में विधि-विधान से पूजन-अर्चन और जलाभिषेक के साथ प्रारंभ हुई थी। कावड़िए बिना रुके निरंतर



दौड़ते हुए उन्हेल, नागदा, जावरा, दलौदा, मंदसौर, पिपलियामंडी और मल्हारगढ़ होते हुए दोपहर करीब 3 बजे नीमच शहर की सीमा में प्रवेश कर गए। पूरे मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर कावड़ियों का भव्य स्वागत किया।

सोमेश्वर महादेव मंदिर में हुआ समापन और महाप्रसादी – यात्रा का औपचारिक समापन शहर के गवालटोली स्थित सोमेश्वर महादेव मंदिर पर हुआ, जहां कावड़ियों ने महाकाल से लाए गए जल से भगवान शिव का जलाभिषेक

किया। शाम 7 बजे मंदिर प्रांगण में सोमेश्वर महादेव की भव्य संध्या आरती की गई, जिसके बाद रात 9 बजे से विशाल महाप्रसादी का वितरण हुआ। कावड़ियों के इस कठिन और अनुशासित प्रयास की पूरे शहर में सराहना की जा रही है।

गांधीनगर निवासी निजी अस्पतालों की पार्किंग से परेशान : कलेक्टर में ज्ञापन सौंपा, अतिक्रमण हटाने और पार्किंग व्यवस्था सुधारने की मांग

नीमच । शहर के गांधी नगर कॉलोनी क्षेत्र में निजी अस्पतालों और व्यावसायिक संस्थानों की पार्किंग व्यवस्था से परेशान रहवासियों ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। उन्होंने तहसीलदार मुंगेर सिसोदिया को कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा।

रहवासियों ने ज्ञापन में बताया कि गांधी नगर क्षेत्र में श्रीराम हॉस्पिटल, आयुष्मान हॉस्पिटल, गुप्ता अमेजिंग फाइनैस जिम और मालवा डायग्नोस्टिक सेंटर जैसे कई व्यावसायिक प्रतिष्ठान संचालित हैं। इन संस्थानों के पास अपनी पार्किंग व्यवस्था नहीं है, जिससे मरीज, परजन और ग्राहक अपने वाहन कॉलोनी की मुख्य सड़कों और घरों के सामने खड़े कर देते हैं। इससे रोजाना विवाद



की स्थिति बनती है।

क्षेत्रवासियों ने यह भी आरोप लगाया कि इलाके में नाले के पास तेजी से अतिक्रमण हो रहा है। इसके अलावा, जिस ग्रीन बेल्ट पर बगीचा विकसित किया गया

था, उस पर भी अवैध कब्जा किया जा रहा है। इससे पर्यावरण और कॉलोनी के स्वस्थ दोनों को नुकसान पहुंच रहा है। पार्किंग की इस गंभीर समस्या को लेकर कुछ दिन पहले भी रहवासियों ने

श्रीराम हॉस्पिटल के सामने विरोध-प्रदर्शन किया था। हालांकि, स्थिति में कोई सुधार नहीं होने पर उन्होंने प्रशासनिक हस्तक्षेप की मांग की।

ज्ञापन में मुख्य मांगें रखी गईं, जिनमें सभी व्यावसायिक संस्थानों को अपनी स्वयं की पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए पाबंद करना शामिल है। साथ ही, नियमों का उल्लंघन करने वाले अस्पतालों की पार्किंग अनुमति तत्काल रद्द करने और नाले व ग्रीन बेल्ट पर किए गए अवैध अतिक्रमण को तुरंत हटाने की मांग की गई। ज्ञापन सौंपने के दौरान गांधी नगर क्षेत्र के दर्जनों रहवासी और वरिष्ठ नागरिक उपस्थित रहे। प्रशासन ने मामले में नियमानुसार जांच कर कार्रवाई का आश्वासन दिया है।



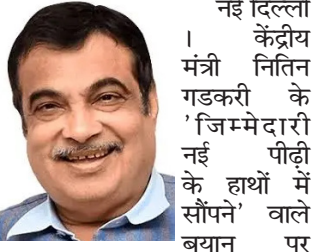
नीमच । शहर में मंगलवार को नगर पालिका के अतिक्रमण विरोधी अमले ने सड़क और शासकीय भूमि पर अवैध कब्जों तथा आम रास्तों में खड़ी भंगार गाड़ियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की। यह कार्रवाई जनसुनवाई और सीएम हेल्पलाइन पर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद की गई। नपा की टीम ने गांधी कॉलोनी, गुप्ता



पुलिया और जवाहर नगर विस्तार क्षेत्रों में अतिक्रमण हटाए। कार्रवाई की शुरुआत गुप्ता पुलिया के समीप से हुई, जहाँ सड़क किनारे अवैध रूप से लगाई गई गुमटियों को बुलडोजर की मदद से हटाया गया। इसके अतिरिक्त, पास की शासकीय भूमि पर कच्ची झोपड़ियां बनाकर किए गए कब्जों को भी बेदखल कर जमीन खाली कराई

गई। गुप्ता पुलिया के बाद, नपा का अमला जवाहर नगर विस्तार क्षेत्र पहुंचा। यहाँ सड़क के बीचों-बीच सालों से खड़ी पुरानी भंगार गाड़ियों को क्रेन की मदद से उठवाकर जब्त किया गया। इन गाड़ियों के ज़रण मार्ग बाधित हो रहा था, जिससे स्थानीय निवासियों को आवाजाही में परेशानी हो रही थी। इस अतिक्रमण विरोधी अभियान

नई पीढ़ी को ज़िम्मेदारी देने का समय - नितिन गडकरी



नई दिल्ली । केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के 'जिम्मेदारी नई पीढ़ी के हाथों में सौंपने' वाले बयान पर मंगलवार को सफाई आई। गडकरी के ऑफिस ने कहा, 'उन्होंने अपने लक्ष्मणराव मानकर ट्रस्ट से जुड़े सामाजिक कार्यों की जिम्मेदारी नई पीढ़ी को सौंपने की बात कही थी।' ऑफिस ने कहा कि उनके बयान का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। दरअसल, कई मीडिया रिपोर्टर्स में गडकरी के इस बयान को उनके राजनीति से रिटायरमेंट लेने से जोड़ दिया गया था। गडकरी का यह बयान 23 अगस्त का है। उन्होंने पुणे के काटोल में कहा था, 'अब ज्यादा काम नहीं कर सकता। जब कर सकता था, तब किया। नई पीढ़ी को जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए। नितिन 37 साल से ज्यादा राजनीति में हैं। पिछले 12 साल से मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। इनके पास सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय है।

कृति के 'मेरा जीवन, मेरे अनुभव' में महिला अधिकारियों ने साझा किए संघर्ष और सफलता के सूत्र



नीमच। साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था कृति के महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'मेरा जीवन, मेरे अनुभव' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हेमलता अग्रवाल एवं जिला शिक्षा अधिकारी ऐश्वर्या मूंढड़ा ने अपने जीवन, संघर्ष, नौकरी और परिवार के बीच सामंजस्य के अनुभव साझा किए। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण

से हुई। संस्था अध्यक्ष ओमप्रकाश चौधरी, महिला प्रकोष्ठ प्रभारी आशा सांभर एवं मंजुला धीरे ने अतिथियों का स्वागत किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हेमलता अग्रवाल ने कहा कि उन्होंने छोटे शहर गुना में रहकर पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी की। पुलिस सेवा में आने के बाद नौकरी और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच कई चुनौतियां आईं, लेकिन पति और सास सहित परिवार के सहयोग से उन्होंने

सभी जिम्मेदारियां निभाईं। उन्होंने कहा कि जनता की समस्या धैर्य से सुनकर उसका समाधान किया जाए तो पुलिस और जनता के संबंध बेहतर बनते हैं। जिला शिक्षा अधिकारी ऐश्वर्या मूंढड़ा परवाल ने ईजीनियरिंग से प्रशासनिक सेवा तक की अपनी यात्रा साझा की। उन्होंने कहा कि माता-पिता के प्रोत्साहन ने उन्हें आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया। उन्होंने पुस्तकों को जीवन का महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बताते हुए

महिलाओं को अपने लक्ष्य के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता ज्ञानोदय विश्वविद्यालय की कुलाधिपति डॉ. माधुरी चौरसिया ने की। उन्होंने दोनों अधिकारियों के अनुभवों और कार्यशैली की सराहना की। कार्यक्रम में कृति संस्था के पदाधिकारी, सदस्य एवं बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित रहे। संचालन श्रीमती साधना सेवक ने किया तथा आभार सचिव रघुनंदन पाराशर ने माना।

स्वर्ण समाज ने यूसीजी कानून, जातिगत आरक्षण का विरोध किया : कलेक्टर को ज्ञापन सौंप कर की आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग



नीमच । नीमच में समस्त स्वर्ण समाज के पदाधिकारियों और सदस्यों ने मंगलवार को कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया। उन्होंने तहसीलदार मुंगेर सिसोदिया को ज्ञापन सौंपकर यूसीजी कानून को तत्काल वापस लेने और जातिगत आरक्षण समाप्त कर आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करने की मांग की। समाजजनों

ने केंद्र सरकार की नीतियों पर आक्रोश व्यक्त किया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार स्वर्ण समाज के हितों की अनदेखी कर रही है और उनके साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार कर रही है। प्रतिनिधियों ने कहा कि देश में जातिगत आरक्षण समाप्त होना चाहिए और हर वर्ग के जरूरतमंदों को आर्थिक स्थिति के आधार पर ही आरक्षण का लाभ

मिलना चाहिए। प्रदर्शन में स्वर्ण समाज के जिला स्तरीय वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में युवा भी मौजूद रहे। समाजजनों ने प्रशासन को चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर जल्द विचार कर उचित कार्रवाई नहीं की गई, तो पूरे जिले में उग्र आंदोलन किया जाएगा। इसकी जिम्मेदारी प्रशासन और सरकार की होगी।

बदलती सामाजिक संवेदनाओं में वृद्धों को चाहिए उजाले

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस



ललित गर्ग

भारत की पारंपरिक संस्कृति में वृद्ध व्यक्ति परिवार के मुखिया, मार्गदर्शक और अनुभव के भंडार माने जाते थे। संयुक्त परिवार में उनकी भूमिका केवल निर्णय लेने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे परिवार की स्मृति, परंपरा और संस्कारों के जीवंत केंद्र होते थे। लेकिन तेजी से बदलती जीवनशैली, महानगरीय संस्कृति, रोजगार के लिए पलायन, छोटे परिवारों की प्रवृत्ति, उपभोक्तावाद और बढ़ती व्यक्तिवादी सोच ने इस व्यवस्था को बदल दिया है। आज कई वृद्ध अपने ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से अकेले हैं।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस समाज के अंतर्भूत को झकझोरने एवं वृद्धों की त्रासद स्थितियों पर सोचने को विवश करता है कि जिन हाथों ने परिवार की नींव रखी, जिन कंधों ने बच्चों के भविष्य का भार उठाया और जिन अनुभवों ने जीवन की अनेक कठिन राहों को पार करने में अगली पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया, उन्हीं वृद्ध माता-पिता को जीवन के अंतिम पड़ाव में अकेलापन, उपेक्षा, असुरक्षा और अपमान क्यों झेलना पड़ रहा है? निश्चित ही कहीं-न-कहीं हमारी सामाजिक संवेदना कमजोर हुई है। जिस समाज में बुजुर्गों का सम्मान सहज संस्कार होना चाहिए था, वहां उनके अधिकारों और सुरक्षा के लिए अलग से दिवस मनाना हमारी सामूहिक आत्मचिंतना का विषय है। भारत तेजी से वृद्ध होती आबादी की ओर बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार 2050 तक भारत की आबादी में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की हिस्सेदारी लगभग 20 प्रतिशत हो सकती है; यानी हर पांच भारतीयों में लगभग एक वरिष्ठ नागरिक होगा। यह केवल जनसांख्यिकीय परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था के सामने आने वाली एक बड़ी चुनौती है। अधिक उम्र तक जीना मानव सभ्यता की उपलब्धि है, लेकिन यदि लंबी आयु के साथ अकेलापन, बीमारी, आर्थिक असुरक्षा और भावनात्मक उपेक्षा जुड़ जाए तो दीर्घ जीवन वरदान के बजाय बोझ जैसा अनुभव होने लगता है। भारत की पारंपरिक संस्कृति में वृद्ध व्यक्ति परिवार के मुखिया, मार्गदर्शक और अनुभव के भंडार माने जाते थे। संयुक्त परिवार में उनकी भूमिका केवल निर्णय लेने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे परिवार की स्मृति, परंपरा और संस्कारों के जीवंत केंद्र होते थे। लेकिन तेजी से बदलती जीवनशैली, महानगरीय संस्कृति, रोजगार के लिए पलायन, छोटे परिवारों की प्रवृत्ति, उपभोक्तावाद और बढ़ती व्यक्तिवादी सोच ने इस व्यवस्था को बदल दिया है। आज कई वृद्ध अपने ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से अकेले हैं। उनके पास रहने का छत है, लेकिन संवाद के लिए कोई अपना नहीं; परिवार है, लेकिन समय नहीं; संतान है, लेकिन अपनापन कम होता जा रहा है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिस वृद्ध ने जीवनभर परिवार को अपने केंद्र में रखा, सेवानिवृत्ति के बाद वही परिवार उसे अपने केंद्र से बाहर करने लगता है। नौकरी में रहते हुए जिस व्यक्ति की सलाह महत्वपूर्ण थी, नौकरी से मुक्त होते ही उसकी उपयोगिता जैसे समाप्त मान ली जाती है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या इसी बदलती सामाजिक संरचना के अंतर्गत है। हर वृद्धाश्रम दुख की कहानी नहीं है; कुछ स्थानों पर वे अकेले और असहाय वरिष्ठ नागरिकों के लिए सुरक्षा और देखभाल का महत्वपूर्ण माध्यम भी हैं। लेकिन



जब वृद्धाश्रम उन माता-पिता का अंतिम ठिकाना बन जाए जिन्हें सक्षम संतान केवल इसलिए घर से दूर कर देती है कि वे आधुनिक जीवन की सुविधाओं के बीच ह्रासवृद्धि बन गए हैं, तब प्रश्न केवल परिवार का नहीं, पूरे समाज के संस्कारों का बन जाता है। संपत्ति अपने नाम कराने के बाद माता-पिता से दूरी बना लेना, उनकी बीमारी को बोझ समझना या उन्हें केवल घरेलू जिम्मेदारियों के लिए उपयोग करना ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं, जिन पर समाज को गंभीर आत्ममंथन करना चाहिए। यह भी सच है कि वृद्धावस्था की समस्या केवल युवाओं की संवेदनहीनता से पैदा नहीं होती। वरिष्ठ नागरिकों को भी बदलते समय के साथ स्वयं को बदलना होगा। नई पीढ़ी की स्वतंत्रता, निजी निर्णय और जीवनशैली को समझना होगा। अनावश्यक हस्तक्षेप से बचते हुए अपने अनुभव को आदेश नहीं, मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत करना होगा। उम्र बढ़ना स्वाभाविक है, लेकिन मन का बूढ़ा हो जाना अनिवार्य नहीं। वरिष्ठ नागरिक यदि सामाजिक गतिविधियों, अध्ययन, सेवा, आध्यात्मिकता, सामुदायिक कार्यक्रमों और रचनात्मक कार्यों से जुड़े रहें तो उनका जीवन अधिक सक्रिय, सार्थक और आनंदपूर्ण बन सकता है। सुप्रीम कोर्ट का कल आया फैसला बुजुर्गों के लिए कानूनी संजीवनी की तरह है जिसमें न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि यदि संतान माता-पिता की देखभाल और भरण-पोषण की जिम्मेदारी निभाने में विफल रहती है, तो वरिष्ठ नागरिकों की संपत्ति और सम्मान की रक्षा के लिए

कानून के तहत बच्चों को उस संपत्ति से बेदखल करने का रास्ता खुला है। सरकार की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है और इस दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। विशेष रूप से 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को आय की परवाह किए बिना आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत पांच लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवरेज देना एक महत्वपूर्ण कदम है। सरकार के अनुसार अक्टूबर 2024 में शुरू हुए इस विस्तार से लगभग छह करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को लाभ पहुंचाने का लक्ष्य है; जून 2026 तक योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए कवरेज का दायरा इसी दिशा में आगे बढ़ाया गया है। इसी प्रकार अटल वयो अभ्युदय योजना का उद्देश्य केवल वृद्धों को आश्रय देना नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा, आवास, सक्रिय एवं उत्पादक वृद्धावस्था, कौशल, परिवहन तथा पीढ़ियों के बीच संबंधों को मजबूत करना भी है। योजना में वरिष्ठ नागरिकों के लिए सहायता, वृद्धाश्रम, सहायक उपकरण, सक्रिय वृद्धावस्था और अनुभव आधारित रोजगार जैसे पहलुओं को भी शामिल किया गया है। ये प्रयास महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सरकारी योजनाओं की सफलता अंततः उनके अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी पहुंचने पर निर्भर करती है। पेंशन, स्वास्थ्य सुविधा, डिजिटल सेवाओं

और कानूनी संरक्षण को अधिक सरल, सुलभ और स्थानीय स्तर पर प्रभावी बनाना अभी भी आवश्यक है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए आर्थिक सुरक्षा जितनी जरूरी है, उससे कहीं अधिक जरूरी भावनात्मक सुरक्षा है। पैसा दवा खरीद सकता है, लेकिन अकेलेपन का उपचार नहीं कर सकता। अस्पताल शरीर का इलाज कर सकता है, लेकिन उपेक्षा से घायल मन का उपचार परिवार का प्रेम ही कर सकता है। इसलिए वृद्ध कल्याण को केवल सरकारी योजना या पेंशन के दायरे में नहीं देखा जा सकता। परिवार को यह समझना होगा कि वृद्ध माता-पिता को केवल भोजन और दवा नहीं चाहिए; उन्हें बातचीत चाहिए, सम्मान चाहिए, निर्णयों में सहभागिता चाहिए और यह भरोसा चाहिए कि वे परिवार के लिए अब भी महत्वपूर्ण हैं। आज की युवा पीढ़ी को यह बात विशेष रूप से समझनी होगी कि माता-पिता का वर्तमान हमारे भविष्य का संकेत है। जो व्यवहार हम आज अपने वृद्ध माता-पिता के साथ करेंगे, आने वाला समय उसी व्यवहार को हमारे सामने खड़ा करेगा। आज हम युवा हैं, कल हम वृद्ध होंगे। आज जिन आंखों को हम अनदेखा कर रहे हैं, कल उन्हीं जैसी आंखों में हमारी अपनी संतानों के व्यवहार का प्रतिबिंब दिखाई दे सकता है। इसलिए वृद्धों की सेवा दान नहीं, कर्तव्य है; उनका सम्मान उपकार नहीं, संस्कार है।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस की वास्तविक सार्थकता तभी होगी जब यह एक दिन का आयोजन न रहकर जीवन की स्थायी दृष्टि बने। परिवार में सप्ताह में एक दिन नहीं, प्रतिदिन संवाद हो; समाज में वरिष्ठ नागरिकों के लिए सक्रिय सामुदायिक मंच हों; स्थानीय संस्थाएं उन्हें ज्ञान, अनुभव और सेवा के अवसर दें; सरकार स्वास्थ्य, पेंशन और सुरक्षा की व्यवस्थाओं को मजबूत करे और युवा पीढ़ी अपनी सोच में परिवर्तन लाए। वृद्धावस्था जीवन की संध्या है, लेकिन संध्या का अर्थ अंधेरा नहीं होता। वह दिनभर की यात्रा के बाद सुनहरी रोशनी का समय भी हो सकती है। आवश्यकता केवल इतनी है कि परिवार उस रोशनी को बुझने न दे। हमारे वृद्ध जीवन के बोते हुए पत्ते नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुभव की खुली किताब हैं। यदि हम उनके अंतिम वर्षों को भय, अकेलेपन और उपेक्षा से भर देंगे तो हम केवल उनके साथ अन्याय नहीं करेंगे, बल्कि अपनी सभ्यता और संस्कारों को भी कमजोर करेंगे। इसलिए आज संकल्प होना चाहिए- वृद्धों के जीवन में अंधेरा नहीं, सम्मान का उजाला हो; अकेलापन नहीं, अपनापन हो; उपेक्षा नहीं, सहभागिता हो और शेष जीवन बोझ नहीं, आनंद एवं गरिमा का उत्सव बने। यही विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस का वास्तविक संदेश और हमारी सबसे बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी है।

संपादकीय

अस्पताल में खौफ

कोई भी अस्पताल बीमार व अशक्त लोगों के जीवन की अंतिम किरण होती है। एक विश्वास का प्रतीक कि वहां से स्वस्थ होकर लौटेंगे। तरह-तरह के रोगों से पीड़ितों का अस्पताल पर भरोसा होता है कि वहां पहुंचकर उनका जीवन सुरक्षित हो जाएगा। लेकिन यदि किसी अस्पताल में उपचार के लिये गई महिला को सूख जांच के नाम पर दुराचार हो और वीभत्स कृत्य उसे मौत के मुंह में धकेल दे तो इससे ज्यादा व भयावह कुछ नहीं हो सकता। यह घटना लाखों मजबूर-बीमार लोगों तथा महिलाओं के भरोसे को तोड़ती है, जब यह पता चलता है कि वीभत्स घटना एक सरकारी अस्पताल में हुई है। हरियाणा के पानीपत स्थित अस्पताल के सीटी स्कैन रूम में एक 58 साल की महिला के साथ हुए दुराचार और उसके बाद रोहतक के पीजीआईएमएस में उपचार के दौरान उसकी मौत ने लाखों लोगों के भरोसे को भी तोड़ा है। निरसंदेह, कानून अपना काम करेगा, पुलिस की जांच अपराधी को सख्त दंड दिलाने में मददगार होगी, लेकिन इस घटना ने संस्थागत सुरक्षा इंतजामों की चिंताजनक नाकामी को एक बार फिर से उजागर कर दिया है। सबसे अधिक विचलित करने वाली बात यह है कि आरोपी चैल्लक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तरह अस्पताल की सीटी स्कैन और एमआरआई यूनिट चलाने वाली एक प्राइवेट कंपनी ने सिक्वोरिटी गार्ड के तौर पर काम करता था। लेकिन सवाल यह उठता है कि वह कथित तौर पर सीटी स्कैन टेक्नीशियन का काम कैसे कर रहा था? निरसंदेह, सरकारी अस्पताल के अंदर इस तरह से दायित्वों की भूमिका में बदलाव होना व्यवस्था की ऐसी नाकामियों की तरफ इशारा करता है, जो किसी व्यक्ति के कुकृत्य से कहीं अधिक आगे की बात है। निरसंदेह, यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना अस्पताल व अन्य सार्वजनिक संस्थानों में देख-रेख, कॉन्ट्रैक्ट की शर्तों के पालन और जवाबदेही को लेकर विचलित करने वाले सवाल खड़े करती है। ऐसा प्रतीत होता है कि अस्पतालों में मरीजों की सुरक्षा के बुनियादी नियम-कानून एक साथ निरर्थक हो गए हैं। सवाल यह है कि पहले ही रोगों, शारीरिक जीर्णता, मानसिक तनावों से गुजर रहे लोगों की सुरक्षा हेतु क्या कोई कायदे-कानून नहीं है? उनकी सुरक्षा महज राम भरोसे है? सरकारी अस्पतालों में मरीजों को कितने धक्के खाने पड़ते हैं और पक्की नौकरी वालों का आमतौर पर मरीजों से व्यवहार कैसा होता है, वह सर्वविदित है। पीड़िता के परिजनों ने आरोप लगाया कि उन्हें मरीज के साथ स्कैन-रूम में नहीं जाने दिया गया। वहां कोई महिला स्टॉफ मौजूद नहीं थी। दुर्भाग्य से महिला मरीज को ऐसे व्यक्ति के भरोसे छोड़ दिया गया, जिसे वास्तव में वहां खड़े रहने का भी हक नहीं था। ये चिकित्सा प्रक्रिया की कोई मामूली चूक नहीं है। ऐसी खाभी में शोषण का खतरा लगातार बना रहेगा। विगत में भी कई ऐसी घटनाओं ने पूरे देश का ध्यान खींचा, जहां महिलाओं के साथ यौन हिंसा हुई। वर्ष 1973 में मुंबई के कैडैप्प अस्पताल में नर्स अरुणा शानबाग के साथ जानलेवा यौन-हिंसा हुई थी। इसी तरह की कोलकाता के आरजीकर मेडिकल कालेज की दुखद घटना, जिसमें यौन हिंसा से मेडिकल की छात्रा की मौत हुई थी। विडंबना यह कि घटना का जमकर राजनीतिक दोहन तो होता है, लेकिन घटना का गुस्सा कम होते ही सुधार के वायदे भी हवा हो जाते हैं। एक बार फिर पानीपत की दुखद घटना ने बताया है कि हमारे नीति-निर्वाताओं की याददाश्त बहुत कमजोर होती है। निश्चित रूप से पानीपत में हुई वीभत्स घटना को महज एक अपराध की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इस घटना के मद्देनजर मरीजों की सुरक्षा से जुड़े नीतिगत फैसलों में बदलाव लाया जाना चाहिए। ऐसे अस्पताल व सार्वजनिक सेवा केंद्रों से जुड़े, प्रत्येक आउटसोर्स किए गए विकल्पों की समीक्षा की जानी चाहिए। तैनात कर्मचारियों की कारगुजारियों-भूमिकाओं का सत्यापन किया जाना चाहिए। अस्पतालों में सीसीटीवी कवरेज का दायरा विस्तृत व मजबूत किया जाना चाहिए। साथ ही अनिवार्य रूप से सुरक्षाकर्मियों की तैनाती का प्रोटोकॉल लागू किया जाना जरूरी है। महत्वपूर्ण यह कि सार्वजनिक-निजी भागीदारी में जवाबदेही से बचने का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। ध्यान रहे कि स्वास्थ्य सेवा में उपचार के साथ लोगों के भरोसे को बनाये रखना भी अनिवार्य शर्त है।

सूक्ति

जो आप खुद पसंद नहीं करते उसे दूसरों पर भी थोपिए।
कन्ययुथियस
स्वतः कुछ नहीं होता सब कुछ करना पड़ता है।
जै. एफ. कैनेडी

युवाओं को मिला सामाजिक बदलाव का मंत्र: ‘एक पेड़ मां के नाम’ के साथ नशामुक्ति, स्वैच्छिकता और स्वावलंबन का संकल्प

नीमच। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद एवं महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के संयुक्त तत्वावधान में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित बीएसडब्ल्यू एवं एमएसडब्ल्यू पाठ्यक्रम के शैक्षणिक सत्र 2026-27 का सत्रारंभ समारोह रविवार को विकासखंड जावद में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नवप्रवेशित एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों का उन्मुखीकरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता एवं मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. राजेश मुजाव्दा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षित युवा सामुदायिक विकास, सामाजिक सेवा और वंचित वर्गों के



उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से शिक्षा को समाज

संबल से श्रमिक परिवारों को बड़ी राहत : नीमच के 106 हितग्राहियों के खातों में पहुंचे 2.25 करोड़ रुपए

नीमच। श्रमिक परिवारों को सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक संबल देने वाली संबल योजना के तहत नीमच जिले के 106 हितग्राहियों को बड़ी सौगात मिली। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को आयोजित हितलाभ वितरण कार्यक्रम के माध्यम से सिंगल क्लिक से हितग्राहियों के खातों में 2 करोड़ 25 लाख रुपए की सहायता राशि अंतरित की। संबल योजना के माध्यम से पात्र श्रमिक परिवारों को विभिन्न परिस्थितियों में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है। प्रदेश सरकार द्वारा जरूरतमंद परिवारों को सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जिला एनआईसी कक्ष, नीमच में किया गया। इस दौरान अपर कलेक्टर बीएस कलेश, श्रम पदाधिकारी बीएल राठौर सहित संबंधित हितग्राही मौजूद रहे। सहायता राशि खातों में पहुंचने से जिले के 106 हितग्राहियों और उनके परिवारों को आर्थिक राहत मिली। अधिकारियों ने योजना के पात्र हितग्राहियों तक शासन की योजनाओं का लाभ समय पर पहुंचाने पर जोर दिया।

एमपी के सरकारी स्कूलों में तीन दिन मनेगी जन्माष्टमी : कृष्ण लीला से लेकर गीता ज्ञान तक होंगे कार्यक्रम

हर-हर महादेव के जयकारों से गूंजा नीमच, भव्य कावड़ यात्रा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, भूतेश्वर महादेव का गंगाजल से किया अभिषेक



नीमच । श्री भूतेश्वर महादेव गंगाजल अभिषेक कावड़ यात्रा समिति के तत्वावधान में शहर में भव्य कावड़ यात्रा निकाली गई। यात्रा का शुभारंभ बस स्टैंड स्थित अमर ज्योतिर्लिंग मंदिर से हुआ। हाथों में पवित्र जल से भरी कावड़ लेकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु यात्रा में शामिल हुए। यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई भूतेश्वर महादेव मंदिर पहुंची।

जयकारों से गूंजा शहर, जगह-जगह हुआ स्वागत - कावड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालु ‘बम-बम भोले’ और ‘हर-हर महादेव’ के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। पूरे मार्ग में भक्ति और उत्साह का माहौल बना रहा। शहरवासियों एवं विभिन्न संगठनों ने जगह-जगह यात्रा का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया।

भूतेश्वर महादेव का गंगाजल से

अभिषेक - यात्रा के भूतेश्वर महादेव मंदिर पहुंचने पर समिति के सदस्यों और श्रद्धालुओं ने भगवान भोलेनाथ का गंगाजल से विधि-विधानपूर्वक जलाभिषेक किया।

इसके बाद महाआरती आयोजित हुई और श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। यात्रा के दौरान पूरा वातावरण शिवभक्ति से सराबोर नजर आया।

भोपाल। मध्य प्रदेश के सभी सरकारी स्कूलों में इस वर्ष श्रीकृष्ण मूल्यों से जोड़ना है।

जन्माष्टमी का पर्व तीन दिनों तक उत्साह और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ मनाया जाएगा। लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) ने इसके लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। आदेश के अनुसार 1 से 3 सितंबर तक स्कूलों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। तीन दिवसीय आयोजन के दौरान विद्यार्थी भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और उनके आदर्शों पर आधारित नाटक, कृष्ण लीला, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे। स्कूलों में भाषण और निबंध प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी। इसके अलावा भगवद्गीता के ज्ञान और श्रीकृष्ण के जीवन मूल्यों पर विशेष सत्र रखे जाएंगे। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और नैतिक



सांदीपनि स्कूलों में गुरु-शिष्य परंपरा पर जोर - प्रदेश के सांदीपनि स्कूलों में जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष कार्यक्रम होंगे। यहां गुरु-शिष्य परंपरा से जुड़े व्याख्यान और प्रस्तुतियां आयोजित की जाएंगी। श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर विशेषज्ञों द्वारा चर्चा भी की जाएगी।

4 सितंबर को स्कूलों में रहेगी छुट्टी - इस वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का मुख्य पर्व 4 सितंबर को मनाया जाएगा। इस दिन स्कूलों में जन्माष्टमी का अवकाश रहेगा। तीन साल से अब स्कूलों में जन्माष्टमी त्योहार विशेष तौर पर मनाया जाने लगा है।



नागेश्वर ज्योतिर्लिंग महत्त्व व इतिहास

भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से 10वां ज्योतिर्लिंग नागेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह ज्योतिर्लिंग भारत के गुजरात राज्य में है, और गुजरात राज्य के द्वारिकापुरी से 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भारत के द्वारिकापुरी में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के परिसर में भगवान शिव की एक बड़ी ही मनमोहक ध्यान मुद्रा में विशाल प्रतिमा बनाई गई है जिसकी वजह से मंदिर 3 किलोमीटर की दूरी से ही दिखाई देने लगता है। भगवान शिव जी की यह मूर्ति 80 फीट ऊंची तथा इसकी चौड़ाई 25 फीट है। तथा इसका मुख्य द्वार अत्यंत साधारण और सुंदर है।

ऐसा माना जाता है की नागेश्वर अर्थात की नागों का ईश्वर नागों का देवता वासुकी जी भगवान शिव जी के गले में कुंडली मार कर बैठे रहते हैं। इस मन्दिर में स्थापित ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने वालों के लिए भगवान शिव जी की बहुत महिमा है। कहा जाता है कि इस मंदिर में विष से संबंधित सभी रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। भगवान शिवजी के 12 ज्योतिर्लिंगों में स्थापित श्री विश्वनाथ का यह दसवां ज्योतिर्लिंग माना गया है। भगवान शिव जी के इन मंदिरों को ज्योतिर्लिंग कहा जाता है, क्योंकि इन स्थानों पर भगवान शिव जी अपने भक्तों की श्रद्धा पूर्वक पूजन से प्रसन्न होकर स्वयं उत्पन्न हुए थे। धार्मिक ग्रंथों के लेखों में कहा गया है कि इस पवित्र ज्योतिर्लिंग के श्रद्धा पूर्वक दर्शन करने से पापों से मुक्ति प्राप्त होती है। हिंदुओं का यह प्राचीन एवं प्रमुख मंदिर केवल भगवान शिव जी को समर्पित है। जिसमें शिवजी की श्रद्धा पूर्वक पूजा आराधना नागेश्वर के रूप में की जाती है। इस ज्योतिर्लिंग को रुद्र संहिता में दारकावने नागेश के नाम से भी जाना जाता है।



नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की धार्मिक मान्यताएं

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव को नागों के देवता के रूप में जाना जाता है। नागेश्वर का संपूर्ण अर्थ नागों का ईश्वर है। पौराणिक कथाओं में इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन की कथा एक बड़ी विशाल महिमा बताई गई है। इस ज्योतिर्लिंग की भी विभिन्न रोचक कहानियां हैं जिसे सभी श्रद्धा पूर्वक सुनते हैं। कहा जाता है कि महात्माओं की कथा को श्रद्धापूर्वक सुनने से जीवन में किए गए सभी पापों से मुक्ति मिलती है। यह मंदिर सुबह 5.00 बजे आरती के साथ खुलता है, किंतु भक्तों के लिए यह मंदिर 6.00 बजे खुलता है। मंदिर के पुजारियों द्वारा कई विधियों द्वारा शिवजी की श्रद्धा पूर्वक पूजा तथा अभिषेक किए जाते हैं। भगवान शिव जी के द्वार पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए शाम 4.00 बजे श्रृंगार दर्शन होते हैं, तत्पश्चात गर्भ गृह में प्रवेश करने पर प्रतिबंध होता है। यहां पर पुजारियों द्वारा भगवान शिव जी की शाम की आरती सांय 7.00 बजे की जाती है तथा भक्तों के दर्शन का समय रात्रि 9.00 बजे समाप्त हो जाता है। भगवान शिव जी के त्योहार और विशेष शुभ अवसर पर यह मंदिर अधिक समय तक खुला रहता है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का निर्माण कार्य

भगवान शिव जी के इस दसवीं ज्योतिर्लिंग का निर्माण कार्य अत्यंत अद्भुत तथा सौंदर्यकरण विधि से करवाया गया है। नागेश्वर मंदिर के मुख्य गर्भ गृह के निचले स्तर पर भगवान शिव जी के इस ज्योतिर्लिंग को स्थापित किया गया है। इस ज्योतिर्लिंग के ऊपर भगवान शिव जी का एक चांदी का बड़ा नाग स्थापित किया गया है। इतना ही नहीं इस अद्भुत ज्योतिर्लिंग के पीछे ही माता पार्वती की प्रतिमा की स्थापना भी की गई है। इस ज्योतिर्लिंग का मंदिर अत्यंत अद्भुत सौंदर्य पूर्वक तरीके से बनाया गया है। कहा जाता है, कि जिन श्रद्धालुओं को ज्योतिर्लिंग का अभिषेक करना है वहां के पुजारियों से अनुरोध करके सफेद धोती पहनकर अभिषेक करवाते हैं।



श्रावण के महीने अगर आप घर बैठे ही भगवान शिव जी के दर्शन करना चाहते हैं तो यहां अवश्य पढ़ें भारतभर में स्थापित भोलेनाथ के 11 विशालकाय प्रतिमाओं के बारे में खास जानकारी।

शिव प्रतिमा (श्री नाथ द्वारा)
ऊंचाई- 351 फुट



राजस्थान में उदयपुर से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर 351 फुट ऊंची बन रही यह प्रतिमा श्री नाथ द्वारा के गणेश टेकरी में स्थित है। इस शिव प्रतिमा के दर्शन आप 20 किमी की दूरी से ही कर सकते हैं।

शिव मूर्ति, मुरुदेश्वरा
(कर्नाटक, भारत)
ऊंचाई लगभग 123 फुट



विश्व की दूसरे नंबर की शिव मूर्ति अरब सागर के तट पर स्थित है। इस संपूर्ण क्षेत्र को मुरुदेश्वरा कहते हैं। बैठक मुद्रा में मुरुदेश्वर मंदिर के बाहर स्थापित शिव की इस मूर्ति की ऊंचाई 37 मीटर अर्थात लगभग 123 फुट है। मुरुदेश्वर दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में उत्तर कन्नड़ जिले के भटकल तहसील में अरब सागर के तट पर स्थित एक कस्बा है। कंदुका पहाड़ी पर तीन ओर से पानी से घिरा यह मुरुदेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यहां भगवान शिव का आत्मलिंग स्थापित है जिसका संबंध रामायण काल से है। मान्यता के अनुसार अमरता पाने हेतु रावण जब शिवजी को प्रसन्न करके उनका आत्मलिंग अपने साथ लंका ले जा रहा था तब रास्ते में इस स्थान पर आत्मलिंग को धरती पर रख दिए जाने के कारण स्थापित हो गया था।

हर की पौड़ी, हरिद्वार
(उत्तराखंड, भारत)
ऊंचाई लगभग 100 फुट



यह मूर्ति हरिद्वार स्थित गंगा नदी के तट पर हर की पौड़ी के पास स्थापित की गई है। यह मूर्ति खड़ी मुद्रा में है जबकि हरिद्वार के पास ऋषिकेश की मूर्ति बैठक मुद्रा में है। बताया जाता है कि बाढ़ के कारण ऋषिकेश की मूर्ति पानी में बह गई। हर की पौड़ी भारत के सबसे पवित्र घाटों में एक है। कहा जाता है कि यह घाट विक्रमादित्य ने अपने भाई भृंहरी की याद में बनवाया था। यहीं पर हर शाम हजारों दीपकों के साथ गंगा

देश में कहां-कहां हैं शिव की विशाल प्रतिमाएं

की आरती की जाती है। हर की पौड़ी के पीछे के बलवा पर्वत की चोटी पर मनसादेवी का मंदिर बना है। मंदिर तक जाने के लिए पैदल रास्ता है। मंदिर जाने के लिए रोप-वे भी है।

शिवगिरि महादेव, बीजापुर
शिवपुर (कर्नाटक)
ऊंचाई लगभग 85 फुट



शिवगिरि महादेव की यह विशालकाय मूर्ति लगभग 85 फुट ऊंची है, जो बीजापुर जिले के शिवपुर स्थान पर सन् 2006 में स्थापित की गई थी। शिव की यह बैठी हुई प्रतिमा 2011 में स्थापित की गई है।

कैलाशनाथ महादेव, सांगा,
जिला भक्तापुर (नेपाल)
ऊंचाई लगभग 143 फुट



विश्व में शिव की सबसे ऊंची मूर्ति नेपाल के चित्तपोल सांगा जिला भक्तापुर में स्थित है। खड़ी मुद्रा में इस मूर्ति का निर्माण कार्य 2004 में शुरू हुआ था और 2010 में यह मूर्ति बनकर तैयार हुई और 21 जून 2011 को इस मूर्ति का अनावरण किया गया। इस मूर्ति को धनराज जैन परिवार ने लगभग 11 करोड़ की लागत से बनवाया था। श्री मनुराम वर्मा और नरेश कुमार वर्मा मूर्तिकार थे। इस मंदिर की विशालता को देखना बहुत अद्भुत है।

नागेश्वर महादेव
दारुकावन (गुजरात)
ऊंचाई 82 फुट



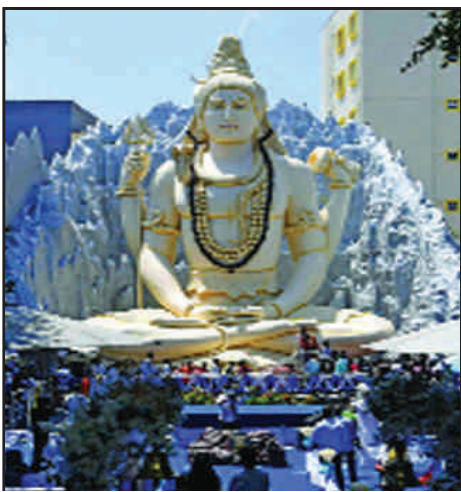
12 ज्योतिर्लिंगों में से गुजरात में 2 ज्योतिर्लिंग हैं- एक सोमनाथ महादेव और दूसरे नागेश्वर महादेव। यह मंदिर पहले बहुत छोटा था लेकिन बाद में इस मंदिर को भव्य रूप दिया टी सीरिज के निर्माता गुलशन कुमार ने। मंदिर प्रांगण के बाहर भगवान शिव की विशालकाय मूर्ति भूतल से 82 फुट ऊंची और चौड़ाई में 25 फुट चौड़ी है। इतनी ही ऊंचाई लिए एक मूर्ति मध्यप्रदेश के ओंकारेश्वर में भी स्थापित है। ओंकारेश्वर में 12 ज्योतिर्लिंगों में से 1 लिंग है, यहीं पर ममलेश्वर महादेव का मंदिर भी है।

कचनार महादेव, जबलपुर
(मध्यप्रदेश)
ऊंचाई 76 फुट



मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले के कचनार शहर में शिव मंदिर के पास स्थापित इस मूर्ति की ऊंचाई 76 फुट है। यहीं पर 12 ही ज्योतिर्लिंगों की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। जबलपुर भेड़ाघाट वॉटर फाल, 64 योगिनी मंदिर और कान्हा नेशनल पार्क के लिए प्रसिद्ध है।

कैम्प फोर्ट शिव मूर्ति,
एयरपोर्ट रोड,
बेंगलुरु (कर्नाटक)
ऊंचाई 65 फुट



65 फुट ऊंची इस मूर्ति की स्थापना 1995 में हुई थी। इस मूर्ति में भगवान शिव पद्मासन की अवस्था में विराजमान हैं। इस मूर्ति की पृष्ठभूमि में कैलाश पर्वत, भगवान शिव का निवास स्थल तथा प्रवाहित हो रही गंगा नदी है।

बेलीश्वर महादेव, भंजनगर,
जिला गंजम (ओडिशा)
ऊंचाई 61 फुट



भारतीय राज्य ओडिशा के भंजनगर में स्थित चंद्रशेखर महादेव मंदिर के पास स्थापित इस मूर्ति की ऊंचाई लगभग 61 फुट है। 6 मार्च 2013 को इस मूर्ति का अनावरण किया गया था।

नामची शिव प्रतिमा (सिक्किम)
ऊंचाई- लगभग 108 फुट



नामची शहर में पहाड़ी पर विराजित शिव प्रतिमा चारधाम यानी बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारका और पुरी के मंदिरों के प्रतिरूप में रूप में देखने को मिलती है। यहां बनी शिव की मूर्ति 108 फुट ऊंची है। इसे सिद्धेश्वर धाम तथा किरातेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। यह सिक्किम के गंगटोक से 92 किलोमीटर की दूरी पर है तथा इस मंदिर में 12 ज्योतिर्लिंगों को भी दर्शाया गया है।

मंगल महादेव, हरियाणा
ऊंचाई- 101 फुट

हरियाणा में मंगल महादेव की विशाल प्रतिमा है। यह दिल्ली से जिसकी ऊंचाई करीब 101 फुट है। शिवरात्रि के साथ ही आम दिनों में भी यहां भक्तों की उतनी ही भीड़ देखने को मिलती है।



सावन के चौथे सोमवार पर शिवालयों में उमड़ा आस्था का सैलाब, हर-हर महादेव के जयकारों से गूंजा नीमच

नीमच। सावन माह के चौथे सोमवार पर शहर के प्रमुख शिवालयों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। किलेश्वर महादेव मंदिर, भागेश्वर मंदिर और भूतेश्वर महादेव मंदिर सहित शहर के तमाम शिव मंदिरों में दिनभर भक्तों की आवाजाही बनी रही। मंदिर परिसर 'हर-हर महादेव' और 'बम-बम भोले' के जयकारों से गूंजते रहे। सुबह से ही श्रद्धालुओं ने भगवान भोलेनाथ का जल, दूध, दही, शहद और गंगाजल से अभिषेक कर विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। भक्तों ने भगवान शिव का आकर्षक श्रृंगार किया और सुख-समृद्धि की कामना की।

दर्शन के लिए लगी लंबी कतारें - चौथे सोमवार को शहर के शिवालयों में विशेष धार्मिक आयोजन हुए। महादेव के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लगी रही। मंदिरों में भक्ति गीतों और शिव जयकारों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। पूजा-अर्चना के बाद मंदिरों में महाआरती की गई तथा श्रद्धालुओं को महाप्रसाद का वितरण किया गया। सावन के चौथे सोमवार पर पूरे शहर में शिवभक्ति का उत्साह देखने को मिला।



दहेज की मांग पर विवाहिता से मारपीट का आरोप, घर से निकाला, भाइयों को अफीम केस में फंसाने की धमकी

नीमच। दहेज प्रताड़ना से परेशान एक विवाहिता ने एसपी कार्यालय पहुंचकर पति सहित ससुराल पक्ष के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की है। रतलाम जिले के धतरावदा निवासी किरण नायक ने आवेदन में बताया कि उसका विवाह करीब 12 वर्ष पूर्व जावद क्षेत्र के महेशपुरिया निवासी नरेंद्र नायक से हुआ था।



पीड़िता का आरोप है कि शादी के बाद से ही पति और ससुराल पक्ष द्वारा 5 लाख रुपए नकद, 4 किलो चांदी और एक तोला सोना मायके से लाने का दबाव बनाया जाता रहा। मांग पूरी नहीं होने पर उसके साथ मारपीट और मानसिक प्रताड़ना की गई। महिला ने आरोप लगाया कि पति शराब के नशे में उसके साथ मारपीट करता था और सास, ससुर, देवर व देवरानी भी प्रताड़ना में शामिल रहे। महिला के अनुसार

बाहर निकाल दिया गया। पीड़िता ने पति पर बंदूक दिखाकर जान से मारने की धमकी देने का भी आरोप लगाया है। आवेदन में महिला ने अपने ससुर पर उसके भाइयों को अफीम के झूठे मामले में फंसाने की धमकी देने का आरोप लगाया। उसका कहना है कि पूर्व में भी उसके भाइयों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई करवाई गई थी। पीड़िता ने बताया कि उसने जावद थाना और महिला थाना नीमच में शिकायत की, लेकिन अपेक्षित कार्रवाई नहीं होने पर वह एसपी कार्यालय पहुंची। महिला ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच करार नामजद आरोपियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई तथा सुरक्षा दिलाने की मांग की है।

गलत दवा के छिड़काव से सोयाबीन फसल नष्ट

फसल लेकर कलेक्टर कार्यालय पहुंचे किसान, मुआवजे और कार्रवाई की मांग

नीमच। जिले की जीरन तहसील के ग्राम खेताखेड़ा डोरिया के किसान और ग्रामीण मंगलवार को कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। उन्होंने नष्ट हो चुकी सोयाबीन की फसल हाथों में लेकर तहसीलदार मृगेंद्र सिसोदिया को ज्ञापन सौंपा।



किसान गणपत लाल ने बताया कि उन्होंने 3 अगस्त 2026 को हरकियाखाल चौराहा (सांदा) स्थित हिमांशु एग्रीटेक बीज भंडार से सोयाबीन के लिए खरपतवार नाशक और कीटनाशक खरीदा था। उनका आरोप है कि दुकानदार ने गलत या अमानक दवा दी। छिड़काव के बाद उनकी खड़ी सोयाबीन की पूरी फसल सूखकर नष्ट हो गई।

गणपत लाल के अनुसार, फसल खराब होने की जानकारी देने पर उन्होंने दुकान संचालक से नुकसान की शिकायत की। किसान को धमकाने के आरोप में संबंधित दुकान संचालक के खिलाफ कृषि विभाग और प्रशासन से कानूनी

मुआवजा और कार्रवाई की मांग - जनसुनवाई में पहुंचे ग्रामीणों ने गलत दवा के कारण हुए आर्थिक नुकसान का उचित मुआवजा दिलाने की मांग की। साथ ही अमानक दवा बेचने और किसान को धमकाने के आरोप में संबंधित दुकान संचालक के खिलाफ कृषि विभाग और प्रशासन से कानूनी

बिजली पोल हादसे में मृत कर्मचारी के परिवार को 50 लाख मुआवजे की मांग, दोषी अधिकारी-कर्मचारी व ठेकेदार पर कार्रवाई की मांग

नीमच। रामपुरा क्षेत्र में बिजली के पोल पर कार्य करते समय आउटसोर्स कर्मचारी मनीष आर्य की मौत के मामले में अब मुआवजे और जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) ने मृतक कर्मचारी के परिवार को 50 लाख रुपए मुआवजा देने सहित विभागीय लापरवाही के लिए जिम्मेदार अधिकारी, कर्मचारी एवं ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।



सीटू के जिला महासचिव सुनील शर्मा ने बताया कि 17 अगस्त 2026 को रामपुरा क्षेत्र में बिजली के पोल पर कार्य करते समय आउटसोर्स कर्मचारी मनीष आर्य नीचे गिर गए थे। बताया गया कि संभवतः बिजली का झटका लगने से वे हादसे का शिकार हुए और उपचार के दौरान उसी दिन उनकी मौत हो गई।



मामले को लेकर सीटू ने सोमवार को दो ज्ञापन सौंपे। पहला ज्ञापन कलेक्टर कार्यालय में ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के नाम डिप्टी कलेक्टर मयूरी जोक को तथा दूसरा ज्ञापन मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के प्रबंध निदेशक के नाम अधीक्षण यंत्री रविकांत रंजन को सौंपा गया। ज्ञापन का वाचन रमेश चंद्र रासिया ने किया।

सुरक्षा उपकरणों के बिना काम कराने पर कार्रवाई की मांग - सीटू ने कहा कि बिजली के पोल और ग्रिड पर काम करने वाले कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर गंभीरता जरूरी है। संगठन का कहना है कि नीमच जिले में इस तरह की यह पहली दुर्घटना नहीं है।

पूर्व में भी विद्युत कार्य के दौरान कर्मचारी दुर्घटनाओं का शिकार हुए हैं, जिनमें कुछ स्थायी रूप से दिव्यांग हुए तो कुछ की जान चली गई। ज्ञापन में मांग की गई कि सभी आउटसोर्स, संविदा, ठेका एवं

नियमित कर्मचारियों का 50 लाख रुपए का दुर्घटना एवं जीवन बीमा कराया जाए। साथ ही बिना सुरक्षा उपकरणों के कर्मचारियों से काम करवाने वाले जिम्मेदार अधिकारियों पर तत्काल कार्रवाई की जाए।

मृतक के परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की मांग - सीटू ने मृतक मनीष आर्य के परिवार को 50 लाख रुपए की मुआवजा राशि देने के साथ ही परिवार के एक सदस्य को तत्काल नौकरी देने की मांग की। दुर्घटना में स्थायी विकलांगता के कारण नौकरी से निकाले गए कर्मचारियों को पुनः नौकरी पर रखने तथा दुर्घटना में मृत कर्मचारियों के परिवारों को लंबित उपादान राशि का भुगतान तत्काल करने की मांग भी ज्ञापन में शामिल है।

RBS GROUP OF INSTITUTION

कॉलेज केम्पस : हर्कियाखाल चौराहा, मंदसौर रोड, नीमच (म.प्र.)

Ph. (07423) 268268-69-70, M.9425922520, 7869587202, 7694015501 7694015502

NURSING (नर्सिंग)	MGMT & COMMERC	Computer & IT	SOCIAL WORK	PHARMACY
GNM (नर्सिंग)	BBA (नर्सिंग)	BCA (नर्सिंग)	MSW (नर्सिंग)	D. PHARMA (नर्सिंग)
B.Sc. (नर्सिंग)	MBA (नर्सिंग)	B.Sc. (cs) (नर्सिंग)	PGDCA (नर्सिंग)	D.Ed (नर्सिंग)
M.Sc. (नर्सिंग)	B.Com (plain) (नर्सिंग)	DCA (नर्सिंग)	B.Ed (नर्सिंग)	
P.B. B.Sc. (नर्सिंग)	B.Com. (Compu.) (नर्सिंग)	PGDCA (नर्सिंग)		

SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों को शासकीय नियमानुसार छात्रवृत्ति

Radhadevi Ramchandra Mangal Group of Institutions

100% Placement Bus Facility Available

Courses Offered -

BBA, BCA, B.Com, ITI (Electrician/Fitter), B.Sc. Plain, B.Sc Micro Biology, B.Sc. (CS), B.Sc Seed Technology, B.Sc Agriculture, B.Ed, D.Ed, MBA, MSW

Bhatkheda, Mhow-Neemuch Road, Near Neemuch By Pass

Mob. 9406837863, 9424899978, 9425328392

SHRI S.R. GROUP OF COLLEGES

Admission Open 2025-26

MBA 2 Year, B.Pharm 4 Year, D.Pharm 2 Year, B.Ed. 2 Year, D.Ed./STC 2 Year, B.Sc. B.Ed. 4 Year, B.A. B.Ed. 4 Year

Singoli Road, Newad, Neemuch (M.P.) City Office : Indira Nagar, PG College Road, Neemuch (M.P.)

8817326635, 8109927774

श्री देव वेल्डिंग वर्क्स

आवश्यकता है

वर्कशाप पर काम करने के लिए

वेल्डर, फिटर और हेल्पर

की तुरंत आवश्यकता है

संपर्क करें:

मदन माली - 9669999779

राजमल गायरी - 9926640630

पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच

पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच

GYANODAYA UNIVERSITY & GROUP OF INSTITUTES

27,000+ Alumni | 24 years

Admission Announcement 2026-27

A Leading & Premier University in the Serenity of Neemuch

Vibrant Campus Life with 9000+ Currently Enrolled Students	Highest Package ₹12.75 Lac	Average Package ₹4.75 Lac	220+ Recruitment Partners
--	----------------------------	---------------------------	---------------------------

Courses Offered

Pharmacy D.Pharm B.Pharm M.Pharm	Nursing B.Sc. Nursing GNM Nursing Post Basic Nur.	Management BBA MBA B.Com M.Com	Engineering B.Tech (CSE, Elect. Mech, Civil/Env & Safety) M.Tech (Mechanical, Energy Tech)	Comp. Science BCA MCA B.Sc.(CS) M.Sc.(CS) DCA/PGDCA
Paramedical BPT BMLT DMLT OT/X-Ray	Agriculture B.Sc.(Ag) M.Sc. (Agronomy) (Horticulture)	Education B.Ed. D.Ed. BA B.Ed.* B.Sc. B.Ed.*	Polytechnic Electrical Mechanical Civil Comp. Sci.	ITI Electrician Fitter COPA
Science B.Sc. (PCMBZ/Biotech/ Microbio/CS)	M.Sc. (Maths/CS/Chemistry/ Physics/Bio.)	Social Work BSW MSW	Lib. Science B.Lib. M.Lib.	
Art & Humanities BA (Plain/ Journalism & mass communication)	MA (Hindi/Eng./Poya./Sociology Political Sci./Eco./Education)	Hotel Mgmt BHMCT Hotel Mgmt		
Hospital Mgmt MBA in Hospital & Health Care Management	Ph.D All Subjects	Diploma Courses YOGA Beauty & Wellness Diet. & Nut. Fitness Mgmt		

For Admission & Enquiry
Gram: Kanawati, Neemuch (M.P.) Call: 9827550959, 7771001344
www.gyanodayauniversity.ac.in | www.gyanodayanmh.in

आज ही बुक करें अपना Zelo इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए

मात्र रु 45,990/- रु 41,990/-

में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ

मात्र रु.41,990/- इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरू ...

INTRODUCING KNIGHT+

#BuiltToPerform

RTO मॉडल मात्र रु 81,000/- रु 76,000/-*

(माइलेज 80-100 कि.मी.)

3 साल बैटरी की वारंटी के साथ

Zelo Electric Scooter

बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने, Lic रोड, नीमच (म.प्र.)

मो. 9407423999, 8770664866